E Content for students of Patliputra University
B.A(Hons),Part-2, Paper 4
Subject- Philosophy

Title/Heading of Topic-"बर्कले द्वारा अमूर्त प्रत्ययों (Abstract Ideas) का खण्डन"

डॉ. राज नारायण सिंह
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशात्र विभाग, राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा,
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

बर्कले के अनुसार अमूर्त-विचारों (जाति-विज्ञानों) का निषेध किये बिना हम जड़ वस्तु की सत्ता का निराकरण नहीं कर सकते, क्योंकि अमूर्त विचार ही जड़ की सत्ता के साधक है। हम अमूर्त विचार या काल्पनिक सामान्य के आधार पर जड़ वस्तु का ज्ञान प्राप्त करते हैं। हम विविध मनुष्यों में मनुष्य सामान्य की काल्पना करते है, विभिन्न गौ मे गोत्व की कल्पना करते हैं, इसी प्रकार हम अनेक गुणों में आश्रय या आधार के रूप में द्रव्य या जड़ सामान्य की कल्पना करते है। यदि हम सामान्य, जाति या प्रत्यय को असत्य सिद्ध करे तो द्रव्य की असिद्धि में सहायता मिलेगी। इसी कारण बर्कले का कहना है कि जड़ वस्तु मे हमारे विश्वास का कारण अमूर्त विचार या जाति प्रत्यय है जो काल्पनिक है, वास्तविक नहीं। लॉक के दर्शन का सबसे बड़ा दोष यह है कि वे अनुभव को ही ज्ञान का स्रोत मानते है तथा अमूर्त विचार या जाति प्रत्यय की भी सत्ता स्वीकार करते है जिनका अनुभव कथमपि सम्भव नहीं होता। बर्कले के अनुसार अमूर्त विचार तो भाषा का दूषित प्रयोग है। वस्तुतः यह कोई वस्तु नहीं।

लॉक के अनुसार मन पहले संवेदनाओं को ग्रहण करने में निष्क्रिय रहता है परन्तु ग्रहण करने के उपरान्त सक्रिय (Active) हो जाता है। सक्रियता से तात्पर्य यह है कि मन विशेष के आधार पर सामान्य की कल्पना करता है। विशेषों का सामान्यीकरण ही मन का अमूर्तीकरण (Abstraction) है इसके द्वारा अनेक समान विशेषों को उनकी समानता के आधार पर एक सामान्य प्रत्यय या जाति प्रत्यय का निर्माण करते हैं। किसी

जाति के विभिन्न व्यक्तियों में कुछ सामान्य विशेषताओं को हम उस जाति का सामान्य तथा सार गुण मान लेते हैं। ये सामान्य तथा सार गुण ही जाति प्रत्यय है। उदाहरणार्थ, मनुष्य जाति प्रत्यय है। यह विभिन्न मनुष्यों का सामान्य तथा सार गुण है। विभिन्न व्यक्तियों में आकृति प्रकृति की भिन्नता अवश्य है परन्तु मनुष्यत्व सबमें समानता विद्यमान है। लॉक का कहना है कि यह जाति प्रत्यय है, सामान्य या अमूर्त प्रत्यय है। ये सभी प्रत्ययों की संज्ञायें है। लॉक का कहना है कि बुद्धि वस्तुओं को अमूर्त प्रत्यय बनाने में समर्थ है। सर्वदा हमारी बुद्धि व्यक्तियों के भेद को भूलकर समानताओं को ग्रहण करती रहती है। मनुष्य में काले-गोरे रंग का भेद हो सकता है, लम्बे नाटे कद का भेद हो सकता है, परन्तु मनुष्यत्व अमूर्त प्रत्यय है। रंग लाल, पीला, नीला, उजला आदि कई प्रकार का हो सकता है, परन्तु सब रंज ही है। अतः रंग जाति प्रत्यय या अमूर्त प्रत्यय है जो सबमें है।

बर्कले अमूर्त प्रत्यय का खण्डन करते तथा इसे भाषा का दुष्प्रयोग बतलाते है। बर्कले अमूर्त प्रत्यय के खण्डन के लिये निम्नलिखित तर्क देते हैं-:

१. अमूर्त प्रत्ययों को उत्पन्न करने की शक्ति मनुष्य में नहीं। मानवी बुद्धि केवल विशेष प्रत्यय को ही उत्पन्न कर सकती है, सामान्य प्रत्ययों को नहीं। मानव के लिये यह असम्भव है कि वह गतिमान वस्तु से पृथक् गति के अमूर्त प्रत्यय का निर्माण करे। तात्पर्य यह है कि गति को गतिशील वस्तु से पृथक् नहीं किया जा सकता। यदि अमूर्त-प्रत्यय का अर्थ वस्तुविहीन विचार की कल्पना करना है तो यह निराधार है। उदाहरणार्थ, हम नृसिंह की कल्पना कर सकते है जिसके कुछ भाग मनुष्य के तथा कुछ पशु (सिंह) के हों। हम मानव शरीर से पृथक कर उसके साथ, पाँव, आँख, नाक की कल्पना कर सकते हैं। सम्भव है कि ये भाग अन्य भागों के बिना भी रह सकते है। परन्तु हम उन भागों के गुणों को पृथक् नहीं कर सकते। तात्पर्य यह कि जो गुण वस्तु से पृथक नहीं किये जा सकते, उनकी हम पृथकतया कल्पना नहीं कर सकते। अतः अमूर्त प्रत्यय की उत्पत्ति सम्भव नहीं।

२. लॉक के अनुसार अमूर्तीकरण या सामान्यीकरण पशु की अपेक्षा मानव की विशेषता है। पशु में सामान्यीकरण की शक्ति नहीं। यदि सामान्यीकरण ही मानव का व्यावर्तक धर्म है तो बहुत से मनुष्य पशु की कोटि में आ सकते

हैं, क्योंकि बहुत से अनपढ़ मनुष्यों को अमूर्त प्रत्यय का ज्ञान नहीं। लॉक का कहना है कि पशु में सामान्य प्रत्यय नहीं हैं, क्योंकि वे भाषा का प्रयोग नहीं करते। मनुष्य भाषा का प्रयोग करता है, अत: अमूर्त या सामान्य प्रत्यय बनाने में समर्थ है। सामान्य प्रत्ययों के संकेत होने के कारण शब्द सामान्य हो जाते है। बर्कले का कहना है कि शब्द सामान्य प्रत्यय के संकेत होने के कारण नहीं, वरन विशेष प्रत्ययों का संकेत बना लिया जाता है जो परोक्ष रूप से वस्तु का निर्देश करता है। उदाहरणार्थ, गति प्रत्यय। बर्कले का कहना है कि ऐसी कोई गति नहीं जो गतिशील वस्तु से पृथक हो।

३. लॉक का कहना है कि अमूर्त प्रत्यय का निर्माण सरल नही, कष्ट साध्य है। बर्कले का कहना है कि अमूर्तीकरण असाध्य है। उदाहरणार्थ, त्रिभुज के अमूर्त प्रत्यय (सामान्यीकरण) से हम ऐसे सामान्य प्रत्यय की कल्पना करते है जो न समबाहु है, न समद्विबाहु है और न विषमबाहु है तथा वह इन सभी का सूचक या बोधक भी है। यह तो वदतोव्याघात है। लोग स्वयं स्वीकार करते हैं कि अमूर्त प्रत्यय असंगत प्रत्ययों का सामान्यीकरण है। परन्तु वस्तु: असंगत प्रत्ययों को एक साथ रखना असंभव है।

४. लॉक का कहना है कि सामान्य प्रत्यय का निर्माण अमूर्तीकरण के द्वारा होता है। बर्कले का कहना है कि कोई भी प्रत्यय सामान्य इसलिये हो जाता है कि वह अपने समान विशेष प्रत्ययों का प्रतीक बन जाता है। इसके लिये बर्कले एक उदाहरण देते हैं कि कोई ज्यामिति किसी रेखा को दो भागों में बाँटने की क्रिया को समझा रहा है। वह एक इंच लम्बी काली रेखा खीचता है। वह रेखा विशेष होते हुए भी सामान्य है, क्योंकि यह अपने समान सभी विशेष रेखाओं को अभिव्यक्ति करती है तथा इसके बारे में जो कुछ भी सिद्ध किया जाता है वह इसके समान सभी रेखाओं के बारे में सिद्ध हो जाता है। तात्पर्य यह है कि यह रेखा विशेष होते हुए भी सामान्य का रूप धारण करती है। यहाँ स्पष्ट है कि बर्कले सामान्यीकरण का निषेध नहीं करते वरन् अमूर्तीकरण का खंडन करते है। अमूर्तीकरण के बिना भी सामान्य प्रत्यय बन सकते है।

५. अमूर्त-प्रत्यय इतने व्यापक है कि इनका स्रोत यदि बुद्धि नहीं तो भाषा अवश्य है। इन प्रत्यय के प्रतिपादक लॉक स्वीकार करते है कि अमूर्त प्रत्यय नामकरण के लिये बनाए जाते हैं या अभिधान के हेतु हैं। उदाहरणार्थ, मनुष्य शब्द सामान्य प्रत्यय है जिसके कारण हम प्रत्येक मनुष्य को एक

नाम से पुकारते हैं। इससे स्पष्ट सिद्ध है कि यदि भाषा या सर्वमान्य संकेत नाम की कोई वस्तु नहीं होती तो अमूर्तीकरण का प्रश्न ही नहीं उठता।

साधारणतः हम जानते है कि प्रत्येक शब्द का एक निश्चित और रूढ़ अर्थ होता है। इसके आधार पर हम सोचते कि कुछ अमूर्त और सुनिश्चित प्रत्यय है जो प्रत्येक सामान्य के एकमात्र अर्थ है और इन्हीं अमूर्त प्रत्ययों के माध्यम से कोई सामान्य नाम किसी विशेष वस्तु का संकेत करता है। यहाँ सामान्य या जाति प्रत्यय का सामान्य नाम तथा वस्तु का माध्यम स्वीकार किया गया है। इस स्वीकृति का फल यह है कि हम भाषा तथा वस्तु के बीच अनावश्यक माध्यम या दीवार खड़ी कर देते हैं तथा दूसरी ओर ऐसी सत्ता को स्वीकार करते हैं जो साधारण वस्तु से भिन्न है। वस्तुतः एक और सुनिश्चित अर्थ नहीं जो सामान्य नाम से सम्बद्ध हो। कहा गया है कि प्रत्येक नाम जिसकी अपनी परिभाषा है, एक निश्चित अर्थ से सम्बद्ध है। उदाहरणार्थ, त्रिभुज नाम अपनी परिभाषा (तीनों भुजाओं से घिरा हुआ) एक निश्चित अर्थ से सम्बद्ध है। बर्कले का उत्तर है कि त्रिभुज की परिभाषा में यह नहीं कहा गया है कि भुजाएँ लम्बी है या छोटी, समान है या असमान धरातल बड़ा है या छोटा इत्यादि। त्रिभुजाकार धरातल के अनेक प्रकार हो सकते है। अत: कोई ऐसा एक सुनिश्चित अर्थ नहीं है जो त्रिभुज शब्द से सम्बद्ध हो। बर्कले इसे स्पष्ट करते हुए कहते है कि एक नाम सो सतत् एक ही परिभाषा देना एक बात है और उसे सर्वत्र एक ही प्रत्यय के लिये व्यवहार करना दूसरी बात है। पहली बात आवश्यक है तथा दूसरी अप्रयोज्य है।

उपरोक्त तर्कों से बर्कले यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सभी प्रत्यय वास्तविक हैं, काल्पनिक नहीं। अमूर्त प्रत्यय का अनुभव इन्द्रियों से कथमपि सम्भव नहीं, अतः इनकी सत्ता स्वीकार्य नहीं है। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि बर्कले अमूर्त प्रत्यय का खण्डन करते हैं, सामान्य प्रत्यय का नहीं। बर्कले के अनुसार अमूर्तीकरण ही बाह्य वस्तु की सिद्धि का आधार है। यदि अमूर्तीकरण की सिद्धि नहीं हो सकती तो बाह्य वस्तु या जड़ वस्तु की सत्ता भी सिद्ध नहीं हो सकती। अत: अमूर्त-प्रत्ययों का खण्डन जड़वाद के निराकरण तथा विज्ञानवाद के समर्थन के लिये आवश्यक है।

----------(०)----------